कैमरा, एक्शन, कविता!

फिल्में देखने का शौक किसे नहीं होता! फिल्म देखते वक्त या देखने के बाद क्या हम सोचते हैं कि जो फिल्म हम देख रहे हैं या अभी देख कर आए हैं उसके कितने पहलू हैं? कितने पैसे, कितने लोग, कितने-कितने हुनरमन्द कलाकार, कितने-कितने घण्टे-महीने और कभी-कभी तो पूरा साल खर्च कर देते हैं....तब कहीं जाकर एक फिल्म बनती है।

फिल्म अपनी बात कहने का बहुत सशक्त माध्यम है। कहानी, पटकथा, डायलॉग, गाने, अभिनय, नृत्य, निर्देशन, फोटोग्राफी, सम्पादन, संगीत, साउंड रिकॉर्डिंग, डबिंग....। फिल्मों के इन हज़ारों पहलुओं में से कुछ के बारे जानने-समझने के लिए चकमक और सीसीआरटी दिल्ली ने मिलकर भोपाल में एक कार्यशाला की।

कार्यशाला में चकमक के सवा सौ पाठक शामिल हुए। चार दिन की यह कार्यशाला 27 जून 2009 को शुरू हुई...

सिनेमाः *दो दोस्त हैं। एक दोस्त दूसरे से पैसे माँगता है। दूसरा मना कर देता है। पहला दोस्त चला जाता है। इतने में तीसरा दोस्त आता है। दूसरा दोस्त उसे पैसे दे ही रहा होता है कि पहला दोस्त आ धमकता है। लड़ाई होती है और पहला दोस्त मारा जाता है।* कहानी इतनी ही थी। लेकिन इसे तीन अन्दाज़ में पेश किया गया – हास्य, सस्पेंस और थ्रिलर। तीनों में कैमरे का एंगल, बैक ग्राउंड म्यूज़िक, अभिनय का अन्दाज़ सभी एकदम अलग थे। इमरान, पवित्रो, पवन, हसन ने आकर्ष खुराना और पूर्वा नरेश के निर्देशन में इसे पेश किया तो बच्चे मज़े से उछल पड़े। साथ ही फिल्म बनने का सफर देखा – कहानी चुनने से लेकर उसके रिलीज़ होने तक का।

कैमराः लॉन्ग शॉट, टॉप शॉट, ज़ूम – कैमरे से कितनी ही कलाकारियाँ की जा सकती हैं! यह भी पता चला कि एक सेकेण्ड में अगर एक के बाद एक 24 फोटो आपकी नज़रों से गुज़रें तो चलती-फिरती फिल्म बन जाती है। ऐसे तमाम पक्षों की न सिर्फ जानकारियाँ मिलीं। बल्कि उन्हें करके दिखाया-सिखाया भी गया।

... और जब नरेश जी ने माउथ ऑर्गन पर "जय हो" गाना बजाया तो बच्चों की तालियाँ रुके न रुकीं। हर रोज़ उनसे इस गाने की फरमाइश होने लगी।

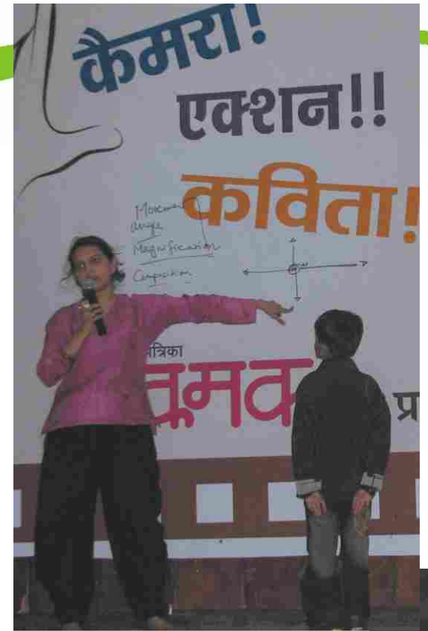

सिनेमा और कविता

सिनेमा में जैसे शॉट होता है ठीक वैसे ही कविता में शब्द होते हैं। जैसे, सिनेमा में किसी शॉट की काटछाँट यानी सम्पादन किया जाता है वैसे ही हम कविता में करते हैं। तुम्हें याद है ... *ले मशालें चल पड़े हैं* वाला चकमक के पिछले अंक का लेख।

पर, फिल्म बनाने के लिए तरह-तरह के साधनों की और कई लोगों की मदद की ज़रूरत पड़ती है और कविता लिखने के लिए...?

कौन, कहाँ से आए जी

नरेश सक्सेनाः कवि, नाटककार

पूर्वा नरेशः कत्थक की जानी-मानी नृत्यांगना, *हनुमान, क्रिश* जैसी फिल्मों की एक्ज़िक्यूटिव प्रोड्यूसर।

आकर्ष खुरानाः नाटक निर्देशक, एक्टर। *क्रिश, यू मी एंड हम* तथा *काइट्स* की कहानी लिखी है।

इमरान, पवित्रो, पवन, हसनः थियेटर एक्टर।

विवेक मिश्राः तबला वादक

कविता लेखन कार्यशाला

इस सत्र की शुरुआत हुई कविता गायन से।

नरेश जी ने सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता “इब्न बतूता पहन के जूता” को नए अन्दाज़ में गाकर सुनाया। और बताया कि कैसे कविता के मूड के हिसाब से उसकी धुन बनानी चाहिए। इस कार्यशाला में नरेश जी के अलावा हिन्दी के तीन जाने-माने कवियों (राजेश जोशी, भगवत रावत और राजकुमार केसवानी) ने बच्चों को कविताएँ सुनाईं। कविताओं पर बातचीत हुई। इस सत्र में केसवानी जी द्वारा लिए गए तीन फोटोग्राफ की बारीकियों पर भी बातचीत हुई।

आखिरी दिन बच्चों की लिखी चुनिन्दा कविताएँ पढ़ी गईं। नरेश जी ने “इब्न बतूता” से एक नई कविता बना दी। इसके बाद विजयदान देथा की कहानी पर बनी फिल्म *चरनदास चोर* देखी गई। इस कहानी पर हबीब तनवीर के नाटक *चरणदास चोर* को कौन भुला सकता है! कार्यक्रम का समापन हुआ मशहूर वॉयलिन वादक वसन्त शेवलीकर तथा उनकी तीन शिष्याओं के वॉयलिन वादन से।

सभी फोटोः के. परसुराम

किताब, थियेटर और फिल्म में क्या फर्क है?

एक किताब देखी – द विज़ार्ड ऑफ ओज़। फिर इसी किताब पर बनी फिल्म देखी। उसके बाद इसी फिल्म के कुछ अंशों का नाट्य मंचन हुआ। किताब, फिल्म और थियेटर इन तीन माध्यमों की खूबियों और सीमाओं को देखा भी, जाना भी।

नाटक के अंशों के साथ बज रहा संगीत कम मज़ेदार नहीं था। शहंशाह ऑफ अज़ीमो के गाने दर्शकों को इतना पसन्द आए कि वे आते-जाते, सोते-खाते उन्हें गुनगुनाने लगे ...

सुनहरा चमकीला रास्ता जाता है जो दूर.....

कुछ दर्शकों ने तो फोन पर यह गुज़ारिश भी कर दी कि ये गाने चकमक में छपना ही चाहिए।

चलिए, तो पेश हैं वे दोनों गानेः

सुनहरा चमकीला रास्ता जाता है जो दूर
शहंशाह ऑफ अज़ीमो वहाँ मिलेंगे ज़रूर
तितलियों के रंग से भी रंग ज़्यादा हैं वहाँ
थोड़ा-सा भी गम नहीं है खुशियाँ हैं भरपूर

जो भी चाहते हो तुम, तुमको मिलेगा वो
मंज़िलें हैं जिस तरफ, रास्ता खुलेगा वो
रुक ना जाना, थम ना जाना
थक के ना हो जाना चूर।
सुनहरा चमकीला रास्ता जाता है जो दूर

... और, वो शेर जो दिल का ज़रा कमज़ोर होता है! वही जो डोरथी और उसके दोस्तों के साथ शहंशाह ऑफ अज़ीमो के पास जाता है – बहुत मज़ा आया, जब पूर्वा जी की मण्डली ने यह गाना गायाः

मैं हूँ.... मैं हूँ इक मामूली-सा शेर
बब्बर बब्बर बब्बर
कैसे कहूँ कहने में मुझको आती है शरम।
पर कहना ही पड़ेगा, थोड़ा हो के बेशरम
अँधेरे से, रात से, कभी-कभी अपने आप से
मुझको लगता है डर।
मैं हूँ इक मामूली-सा शेर बब्बर बब्बर बब्बर
ये दाढ़ी मेरा मेकअप है
जिसके पीछे रहता हूँ मैं छिपकर
इसको कटा दूँ तो, चेहरे से हटा दूँ तो
मेरे दोस्त ही खा लेंगे मुझको बिल्ली समझकर ।

ये दोनों मज़ेदार कविताएँ गोपाल दत्त जी ने लिखी हैं।

क्या तुम इस तरह की कार्यशाला में भाग लेना चाहोगे?

बतूता का जूता

इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
घुस गई थोड़ी कान में

कभी नाक को कभी कान को
मलते इब्न बतूता
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता

उड़ते-उड़ते जूता उनका
जा पहुँचा जापान में
इब्न बतूता खड़े रह गए
मोची की दूकान में

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

इब्न बतूता पहन के जूता...

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविता को नरेश जी ने कुछ ऐसे पेश किया

मोरक्को से चले बतूता, पैदल अपनी शान में
सात बरस में चलते-चलते पहुँचे हिन्दुस्तान में
जो देखा सो लिखा, न देखा
तो भी लम्बी हाँकी,
गोल पिरामिड लिखकर
कोई गप्प न छोड़ी बाकी
गज़ब घुमक्कड़ थे, रहते थे अपनी ही तुकतान में
मन रमता था सदा नए जूतों के अनुसंधान में
इब्न बतूता, इन्हीं गर्मियों में आए भोपाल
हाल देख भोपाल ताल का हुए बड़े बेहाल
किसने सुखा दिया यह ताल
किसने काट दिए सब जंगल
किसने फैलाया यह जाल
जब तक यह सब जान न लो तुम
रहो पूछते यही सवाल
इससे तो अच्छा होता तुम रहते रेगिस्तान में
प्यास लगी अब हमें ले चलो पानी की दूकान में

चित्रः अतनु राय

कविता-कार्यशाला में नरेश सक्सेना के साथ बच्चों ने भी कविताएँ लिखीं!

1

चमगादड़ के घर में कैसी खातिरदारी –
हम भी लटकें
तुम भी लटको...

2

कभी लाल, कभी नीला, कभी पीला
आकाश भी
गिरगिट की तरह रंग बदलता है

3

सूख गया है ताल
समझो सूख गया भोपाल!